

राम रघुराई जाए राम रघुराई ।
अयोध्या नगर में आज बाजती वाधाई ॥
सूरज और चन्दा सी प्यारी है यह ज्योती
सीपी कौशल्या से आए श्री राम जू मोती
सन्त सुखदाई जाए सन्त सुखदाई ॥
घर घर में मंगल है आनंद बहारी
नाचें और गावें मिल सब नर नारी
विश्व हर्षाई सारी विश्व हर्षाई ॥
अवध नरेश फूले अंग न समात हैं
रोम रोम नाचें और पुलकत गात हैं
सम्पति लुटाई बहुति सम्पति लुटाई ॥
नैति नैति वेद कहें सोई बाल रूप भए
अगम जो अमरनि को कौशल्या ने गोद लिए
जै जै धुनि छाई जग जै जै धुनि छाई ॥
एक फूल खिलने से चार फूल खिले हैं
महाभाग्य दशरथ को चारों फल मिलें हैं

मैगसि मन भाई भई मैगसि मन भाई ॥